एनडीडीबी राजस्थान में वैकल्पिक गतिविधियों के जरिए
किसानों की आय को बढ़ावा देगी

किसानों की आय को दोगुना करने के भारत सरकार के उद्देश्य के अनुरूप, राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) राजस्थान में आय में वृद्धि की नई गतिविधियों को बढ़ावा दे रहा है। ऐसी गतिविधियां या तो डेरी, कृषि आधारित अथवा संबद्ध गतिविधियां हो सकती हैं क्योंकि इनके लिए संसाधन ग्रामीण क्षेत्रों में आसानी से उपलब्ध होते हैं।

श्री दिलीप रथ, अध्यक्ष, एनडीडीबी ने कहा कि विभिन्न वैकल्पिक गतिविधियों के जरिए दूध उत्पादकों को उनकी आजीविका के अनेक अवसर उपलब्ध कराने पर केंद्रित आय प्राप्ति से संबद्ध कई गतिविधियों में शामिल करना उनके आर्थिक उत्थान और कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमिता/स्व-रोजगार के नए अवसर सृजित करने के लिए डेरी सहकारी समितियों को आगे आना चाहिए। हमारा दृष्टिकोण किसानों को मात्र आर्थिक सहायता देने के बजाए उनकी क्षमता निर्माण तथा उन्हें आत्म निर्भर बनाने पर केंद्रित होना चाहिए। सभी प्रयास ग्रामीण युवाओं को उद्यमी जैसी सोच-समझ रखने के लिए प्रेरित करने वाले होने चाहिएं। एनडीडीबी ऐसी विभिन्न गतिविधियों की दिशा में निरंतर प्रयासरत है जो हमारे दूध उत्पादकों को स्वरोजगार तथा अतिरिक्त आय का स्रोत प्रदान कर सकती हैं। राजस्थान के किसान अब नए विचारों और नई खोज के प्रति काफी उत्सुक हैं और एनडीडीबी इस क्षेत्र की संसाधन क्षमता पर आधारित नई गतिविधियों के जरिए किसानों की आय में वृद्धि हेतु ठोस प्रयास करना चाहती है।

मधुमक्खी पालन: वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन को एक स्वतंत्र उद्यम के रूप में विकसित किया जा सकता है और इसमें स्वरोजगार तथा ग्रामीण क्षेत्र के किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त करने की संभावना है। इसके अलावा, यह मुख्य कृषि तथा बागवानी फसलों का पराग के छिड़काव के माध्यम से उत्पादन बढ़ाने में उत्प्रेरक के रूप में भी कार्य करता है। भारत की वर्तमान वनस्पति संपदा में 2000 लाख मधुमक्खी कॉलोनी रखने की क्षमता है जो 215 लाख लोगों को रोजगार प्रदान कर सकता है।

एनडीडीबी देश के डेरी नेटवर्क का उपयोग कर किसानों के बीच वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन को बढ़ावा दे रही है। डेरी सहकारिताओं के पास दूध के संकलन, प्रसंस्करण तथा विपणन की एक सुव्यवस्थित वैल्यू चेन है। इसी प्रकार की वैल्यू चेन शहद के लिए आसानी से स्थापित की जा सकती है। बनासकांठा (गुजरात), सुंदरबन (पश्चिम बंगाल) तथा मुजफ्फरपुर (बिहार) के दूध संघ अपने डेरी बुनियादी ढांचे का इस्तेमाल करते हुए पहले ही शहद का संकलन तथा विपणन कर रहे हैं। मधुमक्खी पालन के इच्छुक किसानों के लिए राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड की सहायता से एक सप्ताह का गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध है। राजस्थान के दूध संघों को भी किसानों के बीच इस गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए आगे आना चाहिए।

खाद प्रबंधन: इसे किसानों के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत बनाने और महिलाओं की कठिनाई को कम करने के लिए स्वच्छ भारत अभियान की तर्ज पर डेरी किसानों के लिए विकेंद्रीकृत बायोगैस प्लांट स्थापित करने हेतु प्रयास जारी हैं। व्यक्तिगत स्वामित्व से रखरखाव अच्छा होगा तथा आपस में बांटने की समस्या नहीं